मलिन बस्तियों का भारतीय नगरीयकरण पर प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन

अरविन्द कुमार यादव
शोधार्थी
भूगोल विभाग
चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ
ईमेलः arvindyadavkk1987@gmail.com

सारांश

भारत में और विश्व के समस्त शहरों के नगरीयकरण का स्तर बढने के साथ मलिन बस्तियों में वृद्धि नगरीयकरण की तुलना में अधिक तेजी बढ रही है जिसके कारण शहरीकरण क्षेत्रों के विकास में बाधा उत्पन्न होती है और जैसे–जैसे नगरीय सुविधाओं को आधार भूत संरचना पर उनका बोझ बढता जा रहा है जिसके कारण नगरीय सुविधाओं उनके वृद्धि के अनुपात में वृद्धि नहीं हो पा रही है। मलिन बस्तियों के नगरीय दुष्प्रभाव के साथ–साथ कुछ सकारात्मक प्रभाव भी हमारे शहरी समाज के आवश्यक है क्योंकि जिससे हमारे शहरी समाज की जरूरी सुविधाएं भी मलिन बस्तियों में निवास करने वाले लोगों द्वारा शहरी लोगों को प्रदान की जाती है क्योंकि शहरी क्षेत्रों में निवासियों को रोजमाराह दैनिक आवश्यकता की पूर्ति मलिन बस्तियों में निवास करते लोगों द्वारा प्रदान की जाती है। जैसे–फल तथा सब्जी आदि।

समाज में पायी जाने अधिकांश सामाजिक बुराईयां जैसे शराब पीना, जुआ आदि बुरे कामों ने मलिन बस्तियों को घेर रखा है। मलिन बस्तियों तथा निकट शहरी पर भी इसका गलत प्रभाव पडता है।

मलिन बस्तियों के विकास के लिए सरकार द्वारा समय–समय अनेक प्रकार के सेमिनार गोश्ठिया होती रहती है तथा सरकार द्वारा मलिन बस्तियों के विकास के लिए Slum Area improvement and Clearance Act, 1956 का मकसद मलिन बस्तियों का पूर्ण उन्मूलन तथा राष्ट्रीय मलिन बस्ती विकास कार्यक्रम (NSDP) 1996 के अन्तर्गत राज्यों को ऋण और सब्सिडी की उपलब्धता और 2015 में प्रधानमंत्री शहरी आवास योजना की शुरूआत सभी लाभार्थी को 2022 तक मकान उपलब्ध करना मकसद इन बस्तियों के निवासियों के तहत उन्मूलन कराना प्रमुख कार्य है।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 01.03.2022
Approved: 14.03.2022

अरविन्द कुमार यादव

मलिन बस्तियों का भारतीय नगरीयकरण पर प्रभाव : एक भौगोलिक अध्ययन

RJPP Oct.21-Mar.22, Vol. XX, No. I,

pp.175-178
Article No. 23

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2022-vol-xx-no-1

प्रस्तावना

मलिन शब्द हिन्दी के मल शब्द से निर्मित है जिसका तात्पर्य मैला या मन्दा होता है। अतः मलिनकर्ता गन्दी बस्ती शब्द का पर्याय है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 65.5 मिलियन (22.5%) जनसंख्या मलिन बस्ती में निवास करती है। जो भारत के लगभग 2613 शहरों में निवास करती है। महाराष्ट्र में सबसे अधिक मलिन बस्तियों में जनसंख्या 118 लाख निवास करती है। जनसंख्या के अनुसार UP का भारत में चौथा स्थान है मेरठ में लगभग 55% जनसंख्या 108 मलिन बस्तियों में निवास करती है।

मलिन बस्तियों का विकास शहरी क्षेत्रों में उद्योग धन्धो, व्यापार आदि कार्यों के साथ–साथ आवास कार्य सबसे अधिक विकासित हुआ मिलता है। इनमें आवास कार्यों का विकास जनसंख्या के विकास के अनुपात ने बहुत कम हुआ है। फलस्वरूप संसार के सभी नगरों में गन्दी बस्तियों का प्रतिशत बढता जा रहा है। इन बस्तियों को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है।

1. गन्दी बस्ती गन्दे घने व अंधकार युक्त क्षेत्र का नाम है।
2. ऐसे मकानों का समूह जिससे स्वच्छ हवा और पेय जल की सुविधा उपलब्ध न हो।
3. मलिन बस्ती में सडको की व्यवस्था नही होती है तथा नालियों में कीडे मकोडे, मच्छर आदि पाये जाते है। जो मानव स्वास्थ्य को प्रभावित करते है।

भौगोलिक पारिभाषिक शब्द कोश

मलिन बस्तियाँ निम्न स्तरीय आवासीय बस्ती होती है जहाँ गृह प्रायः पुराने जर्जर तथा निवास के अयोग्य होते है। किन्तु वहाँ निर्धन एवं निम्न स्तरीय जनसंख्या की भीड रहती है। यहाँ आवासीय सुविधाओं का सामान्यत अभाव रहता है और चारों और गन्दगी फैली रहती है। यहाँ का दूषित पर्यावरण इसके निवासियों के स्वास्थ्य सुरक्षा तथा नैतिकता के लिए भयानक होता है।

मलिन बस्तिया किसी भी शहर की रचना के ऊपर बड़ा अभिशाप है। इनकी जनसंख्या शहर की कुल जनसंख्या में 10–60% के मध्य पायी जाती है। मलिन बस्तियों में घरों की हालत बहुत बेकार होती है और लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पडता है। मलिन बस्तियों में जीवन जेल से भी बदतर होता है। यह सत्य है कि हम मलिन बस्तियों को रातोरात समाप्त नहीं कर सकते है। क्योंकि मलिन बस्तियों में बहुत बड़ी आबादी निवास करती है। इसका कारण वहां रहने वाले लोगों बेकार आर्थिक सामाजिक व्यवस्था का होना है।

विकास के साथ–साथ इन मलिन बस्तियों पर विशेष ध्यान नहीं दिया जा रहा है और इनकी मरम्मत का कार्य किया जा रहा है इसी कारण इनकी हालत दिनों दिन खराब होती जा रही है मलिन बस्तियों में एक विभिन्न वर्ग के लोग रहते है।

इनकी आबादी व्यवसाय की अपेक्षा अधिक होती है वातावरण प्रदूषित व गन्दा रहता है और लोगों को रोजगार के साधनों का अभाव झेलना पडता है। इन बस्तियों में अधिकतर दुकानदार खाने पीने का सामान बेचने वाले निजी नौकर, दूधिया, धोबी रिक्शा व तांगा चालक और कचरा बीनने वाले लोग अधिक मात्रा में निवास करते है। मध्य स्थिति के नौकरी को दिये गये मकान भी इन मलिन बस्तियों की श्रेणी में सम्मिलित होते जा रहे है इसका कारण उनकी आधार भूत आवश्यकताओं की पूर्ति का न होना है। अधिकतर मलिन बस्तियों में लोग झुग्गी झोपड़ी कच्चे मकान तथा अर्ध निर्मित पक्के मकानों में रहते है इनमें से बहुत से लोग वे होते है। जो अपने गांव से शहरों की ओर रोजगार

पाने के आते है और काम न मिलने पर उनकी दशा और भी खराब हो जाती है। यहाँ के निवासी किसी भी स्तर या अवसर पर बहुत कम कीमत पर काम करने को तैयार हो जाते है। इन बस्तियों को विकास प्रतिक्रिया में न ही गिना जाता है। इसलिए इनकी हालात में कोई विशेष सुधार नहीं हो पाता है और वे लोग रोजगार न मिलने के कारण और अधिक गरीब हो जाते है। इसलिए इन लोगों में अपराध की भावना उत्पन्न हो जाती है। ये लोग पढे लिखे न ही होते तथा गिरे हुए दर्जे के जुआरी शराबी होते है। यहां की आबादी में मिले जुले वर्ग के लोग निवास करते हैं। इसमें विभिन्न आय, धर्म, संस्कृति, भाषा जात और व्यवसाय के लोग किराये पर तथा अपने मकानों में निवास करते है मलिन बस्तियों में निवास करने वाले लोगों को अपनी पसन्द तथा ना पसन्द के साथ समझौता करना पडता है सरकार को इन मलिन बस्तियों को हटाने और इनके लोगों को दूसरे स्थान पर हस्तातरण करने के लिए प्रोग्राम बनाने चाहिये इन लोगों को उचित रोजगार के अवसर प्रदान किये जाने चाहिये मलिन बस्तियों की समस्याएं बढते हुए समय के अनुसार दुर्लभ होती जा रही है।

पर्यावरण की विशेषताएँ

मलिन बस्तियों के आस पास के क्षेत्र गरीब तथा गन्दे होते है जैसा कि ज्ञात है कि मलिन बस्तियों में शहर के सबसे अधिक गरीब वर्ग के लोग रहते है। जिस कारण वे जमीन न ही खरीद सकते है और परिणाम स्वरूप सरकार द्वारा खाली छोडी गयी जगहों पर गैर कानूनी ढंग से कब्जा कर लेते है।

मेरठ में मलिन बस्तियों की स्थिति अधिक संख्या में गन्दे नालों के पास स्थित है। गन्दे नालों में बहने वाले विभिन्न प्रकार के अपशिष्ठ पदार्थ तथा अन्य गन्दगी को अपने साथ लेकर बहते है। ये शहर के गन्दे पानी के कारण बहुत प्रदूषित क्षेत्र है और आस पास के वातावरण को तथा घरो को भी गन्दा कर रहा है।

पर्यावरण का स्वास्थ्य पर प्रभाव

विभिन्न तरह के प्रदूषण जैसे–जल प्रदूषण तथा सामाजिक बुराईयाँ आदि इन मलिन बस्तियों में बहुत बड़ी संख्या में पायी जाती हैं। झोपड पट्टी वाले तथा कच्चे घरो वाली मलिन बस्तियों में विभिन्न प्रकार कचरा व कूडा निकलता है जिसे वहाँ के निवासी किसी भी खाली स्थान में डाल देते है। जब हवा चलती है तो यह कूडा करकट एक स्थान से दूसरे स्थान तक उडकर पहुंचता रहता है और पर्यावरण को तथा वायु को प्रदूषित करता रहता है।

नालों के किनारे स्थित मलिन बस्तियों में ये बेकार पदार्थ अप्रत्यक्ष रूप से भूमिगत जल को भी प्रदूषित करता है। जिससे वहां पर अनेक प्रकार की बीमारियां उत्पन्न हो जाती है। ध्वनि प्रदूषण की समस्या भी इन क्षेत्रों में अधिक भयंकर स्थिति में होती है। सामाजिक प्रदूषण का भी इन मलिन बस्तियों पर बुरा प्रभाव पडता है।

एक सामान्य व्यक्ति दिन में लगभग 22,000– हजार बार खास लेता है जिससे वह लगभग 16kg वायु ग्रहण करता है जो भोजन तथा जल की अपेक्षा में काफी अधिक है। जब वायु प्रदूषण होता है तो उसकी गैसों के अनुपात में परिवर्तन हो जाता है। वायु प्रदूषण की समस्या स्थान विशेष पर जटिल तथा गम्भीर होती जा रही है। वायु प्रदूषण स्थानीय बहुत बड़े क्षेत्र तथा वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा है। मेरठ शहर भी वायु मेरठ शहर भी आयु प्रदूषण से बचा हुआ नहीं है। प्रदूषण के कारण मानव शरीर बहुत अधिक दुष्प्रभाव पड़ा है। जिससे इन क्षेत्रों अनेक बीमारियों से लोग पीड़ित पाये जाते है जिसका प्रभाव उनकी कार्य क्षमता पर पड़ता है।

मेरठ शहर में रजिस्ट्रर्ड तथा गैर रजिस्ट्रर्ड मलिन बस्तियाँ दोनों प्रकार की ही बस्तिया पायी जाती है। शहर में रजिस्ट्रर्ड बस्तियों की संख्या 108 है तथा मेरठ शहर में लगभग इसी संख्या में गैर रजिस्टर्ड बस्तिया है।

निष्कर्ष

मलिन बस्तियाँ किसी भी शहर के लिए अभिशाप होती है। जो शहर की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करती है। जो किसी भी शहर की भूमिका को भी प्रभावित करती है। सर्वशिक्षा अभियान के माध्यम से सरकार को सम्पूर्ण बस्ती को शिक्षित करने के लिए सरकार को उचित व्यवस्था बनानी चाहिए जिससे वहाँ के निवासियों को शिक्षित बनाया जा सके शिक्षा के द्वारा मलिन बस्तियों में निवास करने वाले स्वच्छता के प्रति जागरूक बनाया जा सकता है, क्योंकि शिक्षा के द्वारा ही लोगों के रूढिवादी दृष्टिकोण को बदला जा सकता है।

सरकार को मलिन बस्तियों में जल निकास के लिए सही ढंग से नालियों का निर्माण कराना चाहिये। जिससे मलिन बस्तियों में सड़क पर होने वाला जल भराव की समस्या का समाधान हो सके। मलिन बस्तियों में जल भराव की समस्या का समाधान होने ही अनेक बीमारियों की समाप्ति हो जायेगी।

सन्दर्भ

1. Madhiwall, A. Nidhi. (2007). "Health care in Urban Sluns in India". The National Medical Journal of India.
2. Gulis, Gabriel. and Olivia, Juma. (2004). "Health status of people of slums in Nairobi, Kenya". Environmental Research 96.
3. Gupta, Kamla. (2006). "Health and Living Conditions in Eight Indian cities", A Report based on NFHS-III August.
4. Government of India (2002). "Condition of Urban Slums" NSSO 58 Roudn (July December 2002) Report No. 486.
5. Bansal. Dr. S. C. Urban Geography.
6. Mourya, S. D. (1989). Urbanization and Environmental problem, Allahabad.
7. Poul, Y. B. (1975). Social life in Indian slum Delhi Development board.